पैने पर लात मारना
(25:13-26:32)

दमिश्क के मार्ग में पौलुस को दर्शन देते हुए प्रभु ने कहा, ''पैने पर लात मारना तेरे लिए कठिन है'' (26:14घ)। यीशु ने उस समय के प्रसिद्ध कृषि विषयक शब्द का इस्तेमाल किया, जिससे कई जगह किसान आज भी परिचित हैं।[1] पैना एक सिरे से नुकीला किए गए छह से आठ फुट लम्बे डण्डे को कहा जाता था। हल चलाते समय किसान अपने एक हाथ में पैना रखता था। पैने का इस्तेमाल वह बैलों को तेज़ चलाने या उन्हें इधर-उधर मोड़ने के लिए करता था। कई बार, कोई बेलगाम बैल जब किसान को दुलत्ती मारने लगता, तो उसे ही कष्ट होता था, अर्थात उसे पहले से भी कठोर खोदना पड़ता था। पैने पर लात मारना कठिन *था!*

यूनानी तथा लातीनी लोग ''पैने पर लात मारने'' की कहावत को अपने ''देवताओं'' के विरुद्ध लड़ने के लिए इस्तेमाल करते थे। पौलुस के लिए, ये शब्द अभियोग की तरह थे कि वह सच्चे परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध लड़ रहा था। यहोवा तो पौलुस को दूसरी दिशा में भेजना चाहता था, परन्तु वह जीवन भर परमेश्वर की योजना के विरुद्ध लड़ता रहा, और यह उसके लिए कठिन था!

अब, हम पौलुस के वर्णन में देखेंगे कि कैसे परमेश्वर ने उसे ऐसी दिशा में ''कुरेद दिया''[2] जिसने उसे हैरान कर दिया, और हम यह भी देखेंगे कि कैसे पौलुस ने आत्मिक सच्चाइयों की बातें सुनने वाले उस राजा के लिए ''पैने'' की उस कहानी का इस्तेमाल किया। पढ़ते समय ध्यान रखें कि प्रभु इस पाठ को *आप* पर एक ऐसी दिशा (*अर्थात रोमांचपूर्ण,* परन्तु *ख़तरनाक* दिशा) में अंकुश लगा सकता है जिसकी आप अपेक्षा नहीं करते!

परिस्थिति (25:13-26:1)

आइए कैसरिया की परिस्थिति की समीक्षा से आरम्भ करते हैं। कई दिन पहले, जवान राजा अग्रिप्पा[3] और उसकी बहन बिरनीके यहूदिया के नये राज्यपाल अर्थात फेस्तुस को बधाई देने आए थे (25:13)।

अपने पिता की मृत्यु के समय अग्रिप्पा केवल सत्रह वर्ष का था, सो उसे अपने पिता का दूर-दूर तक फैला राज्य नहीं दिया गया था। बल्कि, कुछ वर्षों बाद, उसे फलस्तीन के दक्षिण में एक नगण्य सा क्षेत्र दे दिया गया। वर्षों बाद, उसे अतिरिक्त भूमि दे दी गई, परन्तु

उसके पिता की तुलना में उसका राज्य बहुत छोटा था। लेकिन, यहूदी लोगों में उसका खासा प्रभाव था। उसकी नसों में यहूदी खून था और रोम ने उसे महायाजक का चयन करने का अधिकार देकर यरूशलेम में मन्दिर का वैधानिक संरक्षक बना दिया था। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए वह यहूदी धर्म का सरकार द्वारा ठहराया हुआ मुखिया था।

वह सचमुच हेरोदेस था जो आत्मसंतोष के लिए जीता था। व्यवस्था में कौटुम्बिक व्यभिचार की स्पष्ट निंदा के बावजूद उसकी सबसे कुख्यात शरारत अपनी सुन्दर बहन, जूलिया बिरनीके के साथ खुलेआम पापमयी जीवन व्यतीत करना था (लैव्यव्यवस्था 18:1-18; 20:11-21)। प्राचीन लेखकों के अनुसार, इस सम्बन्ध को ''यहूदियों और अन्यजातियों में एक ही तरह का कलंक माना जाता था।''[4]

केवल तेरह वर्ष की आयु में ही बिरनीके का विवाह उसके एक चाचा के साथ हो गया था।[5] पति की मृत्यु के बाद वह अपने अविवाहित भाई की रानी बनकर उसके साथ रहने लगी।[6] एक बार तो, उसने कौटुम्बिक व्यभिचार की सभी अफवाहों को शांत करने के लिए दूसरा विवाह कर लिया, परन्तु वह अग्रिप्पा से दूर नहीं रह सकी। जल्दी ही अपने पति को छोड़कर वह अपने भाई के पास लौट आई।

प्रभु के मार्ग में खोदे जाने वाले लोगों की सूची में, अग्रिप्पा और बिरनीके का नाम सबसे ऊपर होगा![7] फेस्तुस के साथ उनके कई दिन रहने के बाद, राज्यपाल ने यह स्वीकार करते हुए ''... पौलुस की कथा राजा को बताई ...'' (आयत 14) कि इसकी कार्यवाही को आगे बढ़ाने के लिए वह ''उलझन'' में था (आयत 20)। अग्रिप्पा ने कहा था कि वह पौलुस को सुनना चाहता है और फेस्तुस खुशी से उसकी इच्छा पूरी करना चाहता था (आयत 22)।

पौलुस के कानों में यह बात पहुंच चुकी होगी कि हेरोदेस के परिवार के दो सदस्य महल में हैं। उसे यह सुनकर कोई हैरानगी न होती कि वे उसका सिर कटा हुआ देखना चाहते थे (देखिए मत्ती 14:3-12), परन्तु यह जानकर अवश्य ही वह हैरान हुआ होगा कि अग्रिप्पा पौलुस से वचन सुनना चाहता था! जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने पौलुस की उत्सुकता की कल्पना करने का यत्न किया:

> क्या यह सत्य हो सकता है कि मसीह और इन हत्यारे परिवारों के बीच की खाई ... मिटने के इतना निकट है कि उनमें से एक ने ... सचमुच सुसमाचार सुनने की इच्छा की? ... मसीह के लिए हेरोदेस को जीतने की एकमात्र सम्भावना से उसका मन रोमांचित हो उठा होगा।[8]

पौलुस उस रात अधिक नहीं सो पाया होगा। अन्त में, वह दिन आ गया जब उसे अग्रिप्पा को परिवर्तित करने की कोशिश करने का अवसर मिलना था!

> सो दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर पलटन के सरदारों और नगर के बड़े लोगों के साथ दरबार में पहुंचे, तो फेस्तुस ने आज्ञा दी, कि वे पौलुस को ले आएं (प्रेरितों 25:23)।

फेस्तुस ने साफ़-साफ़ मानकर कार्यवाही आरम्भ की:

> ... हे महाराजा अग्रिप्पा, और हे सब मनुष्यो[9] जो यहां हमारे साथ हो, तुम इस मनुष्य को देखते हो, जिसके विषय में सारे यहूदियों ने[10] यरूशलेम में और यहां भी चिल्ला चिल्लाकर मुझ से बिनती की, कि इसका जीवित रहना उचित नहीं।[11] परन्तु मैंने जान लिया, कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए; और जब कि उसने आप ही महाराजाधिराज की दुहाई दी, तो मैंने उसे भेजने का उपाय निकाला।[12] परन्तु मैंने उसके विषय में कोई ठीक बात नहीं पाई कि अपने स्वामी के पास लिखूं, इसलिए मैं उसे तुम्हारे साम्हने और विशेष करके हे महाराजा अग्रिप्पा तेरे साम्हने लाया हूं, कि जांचने के बाद मुझे कुछ लिखने को मिले। क्योंकि बन्धुए को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए, उन्हें न बताना, मुझे व्यर्थ समझ पड़ता है (प्रेरितों 25:24-27)।

विशेषकर यह जान लेने के बाद ''कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया कि उसे मार डाला जाए'' पौलुस को छोड़ने की राज्यपाल की असफलता और भी बेतुकी थी![13]

यह कोई औपचारिक मुकदमा नहीं बल्कि एक अनौपचारिक सुनवाई होने के कारण फेस्तुस ने अग्रिप्पा को साक्षात्कार लेने की अनुमति दे दी। ''अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा; तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा है'' (26:1क)।

प्रवचन (26:1-23)

पौलुस को सांसारिक दृष्टिकोण से अति प्रतापी सभा को सम्बोधित करने का विशेष अवसर मिला था। मेरे तो पांव कांप रहे होते, परन्तु उसे कुछ नहीं हुआ। वैस्टर्न टैक्सट में जोड़ा गया है कि वह ''पवित्र आत्मा के द्वारा आत्मविश्वास से भरपूर और उत्साहित था।'' ''तब पौलुस हाथ बढ़ाकर[14] उत्तर देने लगा'' (प्रेरितों 26:1ख)।[15]

पौलुस ने अपने सम्बोधन में सबसे पहले राजा द्वारा अपने मुकदमे को सुनने के लिए प्रसन्नता व्यक्त की:

> हे राजा अग्रिप्पा, जितनी बातों का यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं, आज तेरे साम्हने उनका उत्तर देने में मैं अपने को धन्य समझता हूं। विशेष करके इसलिए कि तू यहूदियों के सब व्यवहारों और विवादों को जानता है,[16] सो मैं बिनती करता हूं, धीरज से मेरी सुन ले[17] (आयतें 2, 3)।

उसका अपने आपको धन्य समझने का कारण यह था कि अन्त में वह उसके सामने खड़ा था जो स्थिति को और उसे समझ सकता था (पौलुस चापलूसी नहीं कर रहा था; पुरातन यहूदी लेखकों ने अग्रिप्पा की यहूदी धर्म पर पकड़ की पुष्टि की है।)

राजा के सामने खड़ा होने पर खुश होने का पौलुस के पास एक अनकहा कारण यह भी था कि वह अपने पूरे मन से उसे परिवर्तित करना चाहता था! क्या वह अग्रिप्पा को मसीही बनाना चाहता था? क्या वह एक सिद्धांतहीन हेरोदेस को परिवर्तित करना चाहता

था? क्या वह एक ऐसे व्यक्ति को परिवर्तित करना चाहता था जो अपनी बहन के साथ नाजायज़ शारीरिक सम्बन्धों को बड़ी बेशर्मी से सबको बताता फिरता था? निश्चय ही वह बदमाश छुटकारे के योग्य नहीं था! परन्तु पौलुस ने ऐसा नहीं सोचा (2 पतरस 3:9)!

पौलुस के सामने अग्रिप्पा केवल एक सुनने वाला था।[18] प्रेरितों के काम में और कोई प्रवचन इतना व्यक्तिगत नहीं मिलता। पौलुस ने बार-बार अग्रिप्पा का नाम लेकर, उसकी पदवी से और सर्वनाम ''तू'' से सम्बोधित किया (आयतें 2, 3, 7, 13, 19, 26, 27)। पौलुस के प्रवचन की सराहना के लिए, उन दोनों को आमने-सामने देखने की कल्पना कीजिए: एक बूढ़ा आदमी है जो बेड़ियों में बंधा हुआ है और दूसरा जवान है जो राजकीय वस्त्र पहने हुए है; एक उत्सुक प्रचारक है और दूसरा बिगड़ा हुआ; एक की यात्रा समाप्त होने को है, दूसरे की आरम्भ होने वाली है। शायद पौलुस को अग्रिप्पा में अपनी पहले की स्थिति दिखाई दी जब वह जवान, धनी और जिद्दी; क्षमता से भरपूर गलत दिशा में जा रहा; व्यवस्था को जानने वाला परन्तु इसके उद्देश्य से अनजान; बिना खोज किए मसीहियत का विरोध करने वाला था। क्या इस प्रेरित के मन में यह विचार आया होगा कि अग्रिप्पा की भी उतनी ही उम्र है जितनी अपने मन परिवर्तन के समय पौलुस की थी?[19] यह तो मैं नहीं जानता, परन्तु मुझे इतना पता है कि पौलुस उसे वचन सुनाता रहता, तो दिन ढलने तक वह जवान राजा मसीही बन जाता (आयतें 28, 29)!

पौलुस का उत्तर आम तौर पर अपने अनुभवों की बातचीत लगता है। परन्तु, उसकी बातें अपना नहीं, बल्कि जी उठे प्रभु का ही उत्तर थीं (देखिए 2 कुरिन्थियों 4:5)। फिर भी, उत्तम-पुरुष के चार वाक्यों में उसकी प्रस्तुति संक्षिप्त हो जाती है:[20]

''मैं फरीसी होकर ... चला'' (26:4-11)

26:4, 5 में पौलुस ने यहूदी विश्वास में एक जवान आदमी के रूप में अपने दिनों की बात की। फेस्तुस का कहना था कि ''सारे यहूदियों ने ...'' पौलुस पर दोष लगाया था (25:24)। पौलुस का कहना था कि यदि ''सारे यहूदियों'' ने सच कहा होता, तो उस पर दोष लगाने के बजाय वे उसकी प्रशंसा करते।

> जैसा मेरा चाल-चलन आरम्भ से अपनी जाति के बीच[21] और यरूशलेम में था, ये सब यहूदी जानते हैं। वे यदि गवाही देना चाहते हैं, तो आरम्भ से मुझे पहिचानते हैं, कि मैं फरीसी होकर अपने धर्म के सब से खरे पंथ के अनुसार चला (26:4, 5)।[22]

पौलुस ने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों का प्रत्यक्ष स्पष्टीकरण नहीं दिया; परन्तु उसने अपनी बातों में ज़ोर दिया कि वह यहूदियों के साथ दुर्व्यवहार, व्यवस्था की निन्दा या मन्दिर को दूषित करने जैसा काम नहीं कर सकता। एक फरीसी के रूप में अपने जीवन के बारे में बताकर पौलुस ने अपने पुरखाओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय का परिचय दिया, क्योंकि फरीसी वचन की प्रतिज्ञाओं और मृतकों के पुनरुत्थान दोनों में विश्वास रखते थे (23:6, 8)।

> और अब उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे बापदादों से की थी, मुझ पर मुकदमा चल रहा है। उसी प्रतिज्ञा के पूरा होने की आशा लगाए हुए, हमारे बारहों गोत्र[23] अपने सारे मन से रात-दिन परमेश्वर की सेवा करते आए हैं: हे राजा, इसी आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं (आयतें 6, 7)।

पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि उस पर मुकदमे का वास्तविक कारण यह था कि वह वास्तव में उसी बात पर विश्वास करता था जिस पर विश्वास करने का बहुत से यहूदी दावा करते थे। मूल में ''परमेश्वर द्वारा हमारे बापदादों से की प्रतिज्ञा की आशाएं'' आने वाले मसीह,[24] अर्थात इब्राहीम के ''वंश'' की आशा थी (उत्पत्ति 12:3; 22:18; देखिए गलतियों 3:16, 19)। समय बीतने के साथ-साथ, मूल ''आशा'' को विस्तृत कर दिया गया था। नये नियम के समय तक यहूदी लोग इस्राएल की महिमा के बहाल होने की उम्मीद कर रहे थे, कि मसीह उसे पूरा करेगा (देखिए लूका 1:67-79; प्रेरितों 3:20, 21)।

बहाली की आशा के साथ पुनरुत्थान की आशा भी जुड़ी हुई थी (लूका 7:18-23)।[25] दानिय्येल 12:2 में कहा गया है, ''और जो भूमि के नीचे सोये रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए।''[26] लाज़र की मृत्यु के समय, मरथा ने एक आम यहूदी की आशा की ही बात कहते हुए कहा था: ''... मैं जानती हूं, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह [लाज़र] जी उठेगा'' (यूहन्ना 11:24ख)।

पुनरुत्थान व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं पर विश्वास रखने वाले फरीसियों और सभी दूसरे यहूदियों की मूल आशा थी,[27] इसलिए पौलुस को पता चल गया था कि उसके साथी यहूदी उसी बात का प्रचार करने के लिए जिस पर विश्वास करने का वे दावा करते थे कि परमेश्वर ने उस एक को मृतकों में से जिला दिया उसे न्यायालय में घसीटेंगे! मुझे उसकी बात में हैरानगी दिखाई देती है, कि ''हे राजा, इसी आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं'' (आयत 7ख)!

उत्तेजित हुए, पौलुस ने अपने बाकी श्रोताओं की ओर मुड़कर कहा: ''जब कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां[28] यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती?'' (आयत 8)। सम्भवत:, पौलुस द्वारा घूमकर अपने मौखिक पैने को सभी दिशाओं में मारने पर ज्यादातर श्रोता अपनी जगह पर से उछल पड़े।

पौलुस की बातें वहां उपस्थित सभी लोगों के लिए प्रासंगिक थीं। अधिकांश अन्यजाति एक शक्तिशाली परमेश्वर (या देवताओं) में विश्वास रखते थे जिसने सब वस्तुएं बनाई थीं (17:24, 25); यदि वह परमेश्वर संसार को बना सकता था, तो उन्हें यह क्यों नहीं लगता कि वह मुर्दों को भी जिला सकता है? विशेषकर उसकी बातें वहां उपस्थित (अग्रिप्पा सहित) हर एक यहूदी के लिए प्रासंगिक थीं। यदि परमेश्वर ने दूसरों को मुर्दों में से जिलाया तो उन्हें उसके यीशु को जिलाने की बात पर संदेह क्यों करना चाहिए? निश्चय ही, केवल अपनी सीमित समझ में विश्वास रखने वाले, अपने गलत तर्कों पर

भरोसा करने वाले, और केवल अपने ऊपर निर्भर रहने वाले लोगों को पुनरुत्थान हमेशा अविश्वसनीय ही लगेगा।

सभा को चुनौती देने के बाद पौलुस ने स्वीकार किया कि जैसा आज वे सोच रहे थे वह भी कभी उनकी तरह ही सोचता था। फरीसी होने के कारण, वह मृतकों के पुनरुत्थान को सैद्धांतिक रूप में मानता था, परन्तु उसने इस व्यावहारिकता को मानने से इन्कार कर दिया था कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है:

> मैंने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम[29] के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए। और मैंने यरूशलेम में ऐसा ही किया; और महायाजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को[30] बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उनके विरोध में अपनी सम्मति देता था। और हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था,[31] यहां तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया, कि बाहर के नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था (26:9-11)।[32]

अग्रिप्पा यह जानकर अवश्य ही हैरान हुआ होगा कि पौलुस ने कभी मसीहियों को अर्थात अपने ही परिवार को इतने जोश से या इससे भी बढ़कर सताया था। पौलुस के शब्द यकीनन ही ''इस चकित जवान को यह समझाने के लिए थे कि इस सताने वाले में इतना बड़ा बदलाव कैसे आ गया?''

''मैंने ... एक ज्योति ... देखी'' (26:12-18)

पौलुस ने अग्रिप्पा को वह बात बताई जिसने उसके जीवन की काया पलट दी थी:

> इसी धुन में जब मैं महायाजकों से अधिकार और परवाना लेकर दमिश्क को जा रहा था तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के समय मैंने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई देखी। और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े, तो मैंने इब्रानी भाषा में, मुझ से यह कहते हुए यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? पैने पर लात मारना तेरे लिए कठिन है (आयतें 12-14)।

पौलुस के जीवन में पुनरुत्थान पर विश्वास करने वाले फरीसी के रूप में पलने समेत जो कुछ भी घटा था[33] वह यीशु को स्वीकार करने के लिए प्रभु का उसे कुरेदना था (देखिए गलतियों 1:15क)।[34] पौलुस ने बड़े हठ से यीशु का विरोध किया था जिससे उसे ही अधिक कष्ट हुआ। इसी प्रकार, साठ वर्षों से भी अधिक समय से अग्रिप्पा का परिवार भी ''पैने पर लात मार रहा'' था।[35] राजा ईमानदार होता, तो मान लेता कि यह लात मारना कई बार ''कठिन'' होता है; उसके पिता की भयानक मृत्यु इसका एक प्रमाण था।

पौलुस ने आगे बताया कि ज्योति की चकाचौंध से घिरे हुए, उसने कांपते हुए पूछा: ''हे प्रभु तू कौन है?'' उत्तर मिला, ''मैं यीशु हूं: जिसे तू सताता है'' (26:15)। ईश्वरीय पैने ने तलवार और चीरफाड़ करने वाली जर्राही छुरी बनकर उसके हृदय में जाकर, उसके जीवन को नया रूप दे दिया था! जी उठे प्रभु ने उसे आदेश दिया:

> परन्तु तू उठ, अपने पांवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिया है, कि तुझे उन बातों का भी सेवक[36] और गवाह[37] ठहराऊं जो तू ने देखी हैं, और उनका भी जिनके लिए मैं तुझे दर्शन दूंगा। और मैं तुझे तेरे लोगों[38] से और अन्यजातियों से बचाता रहूंगा,[39] जिनके पास मैं अब तुझे इसलिए भेजता हूं कि तू उनकी आंखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं (आयतें 16-18)।

यदि किसी ने विरोध किया हो, ''हमने तो तेरे मुंह से ही सुना है कि यीशु ने तुझे दर्शन दिया,'' तो पौलुस के पास बड़ा सही उत्तर था: ''यदि मैंने यीशु को नहीं देखा, तो तुम मेरे जीवन में आए बदलाव को क्या कहोगे?''[40]

''मैंने ... बात न टाली'' (26:19, 20)

अब पौलुस ने अपने पैने का निशाना जवान राजा के हृदय पर साधा: ''सो हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली'' (आयत 19)। उसके कहने का भाव था कि ''मैं उसका विरोध कैसे कर सकता था?'' पौलुस उसकी बात नहीं टाल पाया, तो अग्रिप्पा कैसे टाल सकता था!

पौलुस प्रभु की आज्ञाओं को मानता था; उसने उसी समय बपतिस्मा ले लिया था (22:16; 9:18)। वह प्रभु की उस आज्ञा के प्रति भी वफ़ादार रहा था जो उसने अपने जी उठने के बाद चेलों को दी थी:

> परन्तु पहिले [मैं] दमिश्क के, फिर यरूशलेम के रहनेवालों को, तब यहूदिया के सारे देश में[41] और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि *मन फिराओ* और परमेश्वर की ओर फिरकर *मन फिराव* के योग्य काम करो (26:20)।

पौलुस ने पहले एक अधर्मी और भोगी रोमी राज्यपाल को ''धार्मिकता'' और ''आत्मसंयम'' की सीख दी थी (24:25); अब उसने एक पश्चात्ताप रहित यहूदी राजा को मन फिराव की सीख दी।[42] ''... यहूदियों के सब व्यवहारों और विवादों'' से परिचित (26:3क) यह व्यक्ति निश्चय ही जानता था कि व्यवस्था के अनुसार, ''यदि कोई अपनी बहन का ... नग्न तन देखे, तो यह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जाति भाइयों की आंखों के साम्हने नाश किए जाएं ...'' (लैव्यव्यवस्था 20:17)। यह ख़तरनाक तो था, पर पौलुस

ने कहना जारी रखा: ''मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिरकर मन फिराव के योग्य काम करो'' (26:20ख)!

''मैं आज तक बना हूं'' (26:21-23)

अग्रिप्पा के लिए यह समझना आवश्यक था कि परिवर्तित होकर उसके लिए मसीही जीवन जीना आसान नहीं होगा। पौलुस ने कहना जारी रखा: ''उन बातों के कारण [किसी अन्य आरोप के कारण नहीं, परन्तु इसलिए कि मैंने व्यवस्था से हटकर अन्यजातियों में उद्धार का प्रचार किया] यहूदी मुझे मन्दिर में पकड़ के मार डालने का यत्न करते थे'' (आयत 21)। इसी प्रकार, यदि राजा अपना जीवन यीशु को दे देता तो उसके मित्र भी उससे मुंह फेर लेते।

अग्रिप्पा के लिए यह जानना भी जरूरी था कि ऐसा समर्पण करने पर प्रभु उसके साथ खड़ा होगा। इस कारण पौलुस ने जल्दी से जोड़ दिया, ''सो परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं'' (आयत 22)। यीशु ने उसे ''खड़ा'' होने (आयत 16) के लिए कहा था और वह आज तक परमेश्वर की सहायता से *खड़ा* ही था। जो शक्ति पौलुस को मिली थी वह राजा को भी मिल सकती थी।

प्रभु पर निर्भर रहकर, पौलुस उसकी आज्ञा को पूरा कर पाया था:

> और छोटे बड़े सभी के साम्हने गवाही देता हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो भविष्यवक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि होने वाली हैं। कि मसीह को दुख उठाना होगा, और वही सब से पहिले मरे हुओं में से जी उठकर,[43] हमारे लोगों और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा (आयतें 22ख, 23)।

मैं सुन सकता हूं कि यह प्रमाणित करने के लिए कि मसीह मारा जाएगा और जी उठेगा और सुसमाचार का प्रचार यहूदियों और अन्यजातियों में उसके नाम से किया जाएगा, व्यवस्थाविवरण 18, यशायाह 53 और अन्य पदों से उद्धृत कर रहा है। पौलुस को मैं यह कहते हुए भी सुनता हूं कि, ''यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, मसीह है'' (प्रेरितों 17:3ख)!

अगला युक्तिसंगत कदम अग्रिप्पा से यह पूछना होगा कि वह मूसा और भविष्यवक्ताओं की लिखी बातों को मानने का इच्छुक है या नहीं (26:27)। इससे पहले कि पौलुस उससे पूछ पाता, उसे रोक दिया गया।

शृंखला (26:24-32)

अध्याय के आरम्भ में सुनवाई की कार्यवाही अग्रिप्पा को सौंपे जाने के समय से ही फेस्तुस दृश्य से बाहर हो गया था। परन्तु, स्पष्टतया पौलुस का प्रवचन जारी रहने के कारण उसकी उत्तेजना बढ़ती ही जा रही थी। सम्माननीय अतिथि को बार-बार पौलुस द्वारा पैना

लगाता देख, राज्यपाल ने फैसला किया कि अब RSPCA (द रोमन सोसायटी फॉर द प्रिवेंशन ऑफ़ क्रुएलिटी टू अग्रिप्पा) का कानून लग जाना चाहिए।[44] ''जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था, तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा; हे पौलुस, तू पागल है: बहुत विद्या[45] ने तुझे पागल कर दिया है'' (आयत 24)।

फेस्तुस के आवेग से हम सतर्क तो हो जाते हैं, परन्तु उसके शब्दों से हमें कोई हैरानी नहीं होती। संसार की सबसे बड़ी सच्चाई को यह कहकर कि यह ''यीशु नाम के किसी मनुष्य के विषय में, जो मर गया था और पौलुस उसको जीवित बताता था, विवाद'' है (25:19), खारिज कर देने वाले ओछे व्यक्ति के लिए उस सच्चाई के सबसे बड़े पक्षपोषक को एक पागल कहकर खारिज कर देना बड़ी बात नहीं थी।

असल में पागलों जैसा व्यवहार तो फेस्तुस स्वयं कर रहा था। पौलुस ने बड़े शांत होकर उत्तर दिया: ''हे महाप्रतापी फेस्तुस,[46] मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं'' (26:25)। यीशु को ग्रहण करने से पहले पौलुस पागल *था* (आयत 11[47]), परन्तु अब वह ''सचेत'' हो गया था (मरकुस 5:15)।

प्रेरित अग्रिप्पा की ओर मुड़ा: ''राजा भी जिस के साम्हने मैं निडर होकर बोल रहा हूं, ये बातें जानता है, और मुझे प्रतीति है, कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना तो कोने में नहीं हुई'' (आयत 26)। मसीहियत का प्रारम्भ कहीं कोने में छुपकर नहीं हुआ; सुसमाचार का प्रचार बड़े ज़ोर के साथ छतों से किया गया था (मत्ती 10:27)। अग्रिप्पा के जन्म का सम्बन्ध यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के आरम्भ के समय से था; उसे अपनी मां के दूध के साथ-साथ यीशु और उसके प्रेरितों की कहानियों का भोजन भी मिला था। वह पौलुस द्वारा कही गई सभी बातों की पुष्टि कर सकता था। परन्तु, अपने मेज़बान का विरोध और कैदी का पक्ष लेने से उसकी कुर्सी हिल सकती थी। इसलिए वह चुप रहा।

यदि अग्रिप्पा यह सोचता कि उसका चुप रहना पौलुस को डरा देगा तो यह उसकी भूल थी। पौलुस ने उस पर दबाव डाला: ''हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यवक्ताओं की प्रतीति करता है? हां, मैं जानता हूं, कि तू प्रतीति करता है'' (आयत 27)। यदि जवान राजा कह देता कि वह भविष्यवक्ताओं में विश्वास नहीं करता, तो वह यहूदी लोगों का सम्मान तथा समर्थन खो बैठता। यदि वह कह देता कि वह भविष्यवक्ताओं में विश्वास करता है, तो पौलुस का अगला प्रश्न यही होता, ''फिर क्या तू यह स्वीकार करने के लिए तैयार है कि भविष्यवक्ताओं ने यीशु के विषय में ही बताया है?'' अग्रिप्पा को *कुछ* तो कहना ही था; हॉल में हर कोई उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। अन्त में वह बोल पड़ा: ''तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?''[48] (आयत 28)।

काश मुझे पता होता कि अग्रिप्पा ने ये शब्द कैसे कहे अर्थात उसके स्वर की टोन, उसके चेहरे का हावभाव, उसके शरीर की स्थिति कैसी थी। जैसा कि विभिन्न अनुवादों से स्पष्ट है, मूल शास्त्र की व्याख्या कई प्रकार से की जा सकती है।[49] कई लोगों का मानना है कि अग्रिप्पा ने *गम्भीर* होकर ये शब्द कहे (जैसे कि KJV); अन्यों का मानना

है कि राजा पौलुस से पूरी तरह *सहानुभूति* तो रखता था, परन्तु वह पूरी तरह से कायल नहीं हुआ था (NIV); औरों को तो यहां तक निश्चय है कि अग्रिप्पा ने *व्यंग्य* से ये शब्द कहे थे (RSV)। अग्रिप्पा का झुकाव पहले, पूरी सुनवाई में और पौलुस के प्रवचन के बाद भी पौलुस की ओर था (25:24; 26:1, 32), इसलिए हम सम्भवत: व्यंग्य को एक विकल्प के रूप में निकाल सकते हैं। राजा मसीही बनने के कितना निकट था, हमें कभी पता नहीं चल पाएगा।

अग्रिप्पा की बातों का जो भी अर्थ हो परन्तु पौलुस ने उनका शाब्दिक अर्थ ही लिया[50] और प्रेरितों के काम में मिलने वाली सबसे शक्तिशाली और अर्थपूर्ण अपील के लिए उनका प्रयोग किया:

> परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु जितने लोग [देखिए पौलुस अपना हाथ बिरनीके, फेस्तुस, अतिथियों, यहां तक कि सिपाहियों की ओर भी घुमा देता है] आज मेरी सुनते हैं, इन बन्धनों को [अब देखिए कि पौलुस हथकड़ी लगी अपनी कलाई पकड़कर कहता है] छोड़[51] वे मेरे समान हो जाएं[52] (26:29)।

स्पष्टत:, अग्रिप्पा को लगा कि वह पहले ही बहुत कुछ बोल चुका था। एकदम ''तब राजा और हाकिम और बिरनीके और उनके साथ बैठनेवाले उठ खड़े हुए'' (आयत 30)। मैंने समय-समय पर, प्रख्यात लोगों से बातचीत की है। उनके खड़े हो जाने पर आप समझ जाते हैं कि इन्टरव्यू समाप्त हो गया!

फेस्तुस और उसके अतिथि पौलुस की अनुरोध करती आंखों से मुक्त होते ही उसके बारे में ''अलग जाकर आपस में कहने लगे'' (आयत 31क)। उनका सर्वसम्मत निर्णय था कि ''यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता, जो मृत्यु या बन्धन योग्य हो'' (आयत 31ख)। पौलुस के लिए यह विजय थी, परन्तु वह विजय नहीं जो वह चाहता था। वह चाहता तो यीशु को न्यायसंगत सिद्ध करना था परन्तु उसने अपने आपको निर्दोष ठहरा दिया था। वह चाहता तो उनकी आत्माओं को जीतना था परन्तु इसके स्थान पर उसे उनका समर्थन मिल गया।[53]

परन्तु, फेस्तुस रोम भेजने के लिए अपना पत्र लिखने वाला नहीं था; पौलुस के विरुद्ध उसे अभी भी कोई दोष नहीं मिला था! जो कुछ भी उस राज्यपाल ने अन्त में लिखा, उससे हम जान सकते हैं कि फेस्तुस ने अपने आपको बचाकर इस केस को सही ढंग से न निपटाने का दोष हर किसी पर लगा दिया! स्पष्टत:, उसकी रिपोर्ट पौलुस के पक्ष में भी थी, क्योंकि रास्ते में और रोम में भी उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया था (28:16, 30, 31)।

अध्याय 26 में एक अन्तिम टिप्पणी है जो लगभग एक अविश्वसनीय घटना है। किसी हेरोदेस ने कभी भी यीशु के किसी अनुयायी की प्रशंसा नहीं की होगी। कोई यहूदी

अगुआ जो महायाजक के पक्ष में हो पौलुस के पक्ष में अच्छी बात नहीं कह सकता था; परन्तु हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय, जिसने पौलुस की हत्या करने की ठानने वाले महायाजक को नियुक्त किया था, ने दोनों ही काम किए! ''अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा; यदि यह मनुष्य कैसर की दुहाई न देता, तो छूट सकता था''[54] (आयत 32)। ''हेरोदेसों में अन्तिम'' इस आदमी से और इसके संदेश से प्रभावित हो गया था! हम हैरान रह जाते हैं कि क्या हुआ होगा। इसका हमें कभी पता नहीं चल पाएगा।

सारांश

निराश पौलुस को दोबारा कोठरी में ले जाते देखकर, हम यह कहने के लिए लालायित हो सकते हैं, ''यह तो समय गंवाने वाली बात थी! यह प्रवचन पौलुस के सबसे उत्तम प्रवचनों में से एक था, और उससे एक व्यक्ति भी मसीही न बन सका!'' विचार करने पर, हमें अहसास होता है कि यह समय को व्यर्थ गंवाना नहीं था: अग्रिप्पा और उपस्थित अन्य लोगों को रोशनी दिखा दी गई थी; उन्होंने अपनी आंखें बन्द कर लीं तो इसमें पौलुस का दोष नहीं था। अग्रिप्पा और दूसरे लोगों को स्वतन्त्रता का मार्ग दिखा दिया गया था; वे पाप के दास बने रहे तो इसमें पौलुस का कोई दोष नहीं था। पौलुस ने उनमें यीशु का प्रचार कर दिया था; अब उनके पास कोई बहाना नहीं था।

उम्मीद है कि इन आयतों का अध्ययन करते हुए, आपने अपने आपको अग्रिप्पा की जगह रखा है। मुझे यह भी उम्मीद है कि अपने वचन के द्वारा आपके जीवन की दिशा को बदलने की प्रभु द्वारा कोशिश करते समय आपको उसके पैने की चुभन महसूस हुई होगी।[55] पौलुस की तरह, मैं भी अनुरोध करता हूं, ''परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, जितने लोग आज मेरी सुनते हैं ... वे मेरे समान हो जाएं'' अर्थात वे यीशु के अनुयायी अर्थात मसीही बन जाएं (प्रेरितों 26:29)। अन्त में, *आपको* यह निर्णय लेना होगा कि आप प्रभु को स्वीकार करेंगे या नहीं। आप पौलुस की तरह भी बन सकते हैं, जिसने ''उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली'' (आयत 19ख), या फिर अग्रिप्पा जैसे बन सकते हैं, जो उठ खड़ा हुआ और चला गया। इन दोनों में से आप क्या बनेंगे?

विजुअल-एड नोट्स

छह या आठ फुट की कोई लकड़ी ढूंढ़कर उसके सिरे पर पैने को दर्शाने के लिए चाकू से काट लें। दिखाएं कि कैसे पैना भूमि की ओर समतल, कमर से थोड़ा ऊंचा पकड़ा गया था। पाठ के दौरान इसे अपने नजदीक ही रखें, और अग्रिप्पा पर पौलुस द्वारा इसे चुभोने का उल्लेख करते हुए अपने पैने को हवा में चुभोकर इस विचार को अच्छी तरह समझाएं।

यदि आप ''थोड़े ही'' की धारणा पर ज़ोर देने का निर्णय लेते हैं (नीचे दिए ''प्रवचन नोट्स'' देखिए), तो बोर्ड पर कई वस्तुओं को रखकर आरम्भ करें: पहले, एक गलत

समीकरण लिखें। फिर, कोई प्रसिद्ध नाम या शब्द लिखकर उसमें एक अक्षर गलत लिख दें। अन्त में, फिर एक खाई को पार करने की कोशिश करते हुए (और पार न कर पाते) एक छड़ी चित्र बनाएं। उदाहरण के लिए:

14
+17
32

डोविड (Dovid)
रोपर (Roper)

पूछिए कि, ''इन उदाहरणों में सामान्य बात क्या है?'' सभी ''थोड़े कम'' हैं। जोड़ *लगभग* सही है; नाम के अक्षरों का जोड़ *लगभग* सही है; कूद रहे आदमी ने *लगभग* पार कर ही लिया था। इनमें से हर बात सही होने के बहुत निकट है, परन्तु सही नहीं है। जोड़ 97 प्रतिशत सही नहीं है; यह 100 प्रतिशत गलत है। नाम 90 प्रतिशत सही नहीं है; यह 100 प्रतिशत गलत है। आदमी पार करने वाला नहीं था; उसने पार किया ही नहीं! ''लगभग'' का अर्थ काम पूरा होना नहीं है!

प्रवचन नोट्स

अग्रिप्पा के अपरिवर्तित रहने की कहानी ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 70 पर सुझाए मन परिवर्तनों की शृंखला में अन्तिम पाठ है। इस शृंखला पर विचार करना हो तो आप इस पाठ का इस्तेमाल कर सकते हैं या आप इनमें से किसी विचार को प्राथमिकता दे सकते हैं।

इस अपरिवर्तित रहने के बारे में ''लगभग मना ही लिया'' या ''लगभग परन्तु खोया हुआ'' (KJV और NKJV में 26:28 के वाक्यांश का इस्तेमाल करते हुए) एक उत्कृष्ट प्रवचन है। मई 1985 के *द प्रीचर'ज़ पीरियोडिकल* (अब *ट्रुथ फॉर टुडे* [*अंग्रेज़ी*]) के पृष्ठ 26 पर ''आलमोस्ट परसुएडड'' शीर्षक से पॉल रोजर्स का एक प्रवचन छपा था। आप इस विचार का प्रयोग कर सकते हैं: ''दो प्रकार के लोग हैं: 'लगभग' मसीही और 'पूर्णत: से' मसीही।'' (यदि आप इस पाठ के साथ ''लगभग'' पर सामग्री का इस्तेमाल नहीं करते तो इसे ''राज्य से दूर नहीं'' पर प्रवचन में इस्तेमाल किया जा सकता है [मरकुस 12:34]।)

(ऊपर दी गई अध्ययन गाइड में, चार्लस स्विंडॉल ने इस कहानी से ''किसी गैर मसीही मित्र के साथ यीशु के विषय में बात कैसे करें'' पर सुझावों की एक शृंखला भी दी।)

अग्रिप्पा से सम्बन्धित अध्ययन करने का एक ढंग मत्ती 19, मरकुस 10 और लूका 18 वाले धनी के साथ उसकी तुलना करते हुए ''एक धनी जवान शासक'' पर प्रवचन

हो सकता है। कई बातों में वे आपस में काफी मिलते जुलते थे, और कई बातों में वे एक दूसरे से भिन्न थे, परन्तु अन्त में दोनों ने ही जीवन में मिलने वाले सबसे अच्छे अवसर को गंवा दिया।

इस कहानी का मुख्य आकर्षण पौलुस के मन परिवर्तन का तीसरा वृत्तांत है। हम पिछले भागों में इस मनपरिवर्तन पर विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं, इसलिए प्रेरितों 26 के अपने अध्ययन में मैंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि पौलुस ने अग्रिप्पा को परिवर्तित करने की कोशिश में इस वृत्तांत का इस्तेमाल किया। आप भी मनपरिवर्तन पर ही ज़ोर देना पसन्द कर सकते हैं (इस भाग में प्रेरितों 22 पर नोट्स देखिए)। प्रेरितों 26 के वृत्तांत के सम्बन्ध में, मार्क क्लेयर डे ने मन परिवर्तन से पहले और बाद में शाऊल/पौलुस द्वारा दिखाए गए *जोश* पर ज़ोर दिया। उसने पौलुस के ''गलत जोश'' (जब वह मसीहियों को सता रहा था), पौलुस के ''सही किए गए जोश'' (प्रभु के दर्शन से) और पौलुस के ''सुसमाचारीय जोश'' (अग्रिप्पा को परिवर्तित करने की उसकी कोशिश) की बात की।

रिक ऐचले ने प्रेरितों 26 पर प्रचार करते हुए, एक-एक आयत का अध्ययन नहीं किया, बल्कि पौलुस द्वारा अपने प्रवचन में मसीह पर दिए ज़ोर पर ही ध्यान दिया जिसमें मसीह की वास्तविकता, मसीह का पुनरुत्थान, मसीह का प्रकटीकरण, मसीह का (अन्य जातियों तक भी) पहुंचना तथा मसीह का उत्तर शामिल हैं (''एवायडिंग द ओबवियस'' नामक प्रवचन से।)

मैंने मुख्य प्रकाश अग्रिप्पा पर रखा, परन्तु फेस्तुस भी ध्यान देने योग्य है। ''एक अज्ञानी जो अपनी अज्ञानता पर घमण्ड करता था'' पर प्रवचन दिया जा सकता है। शास्त्र का हवाला प्रेरितों 26:24 होगा जहां फेस्तुस ने पौलुस की ''बहुत विद्या'' के बारे में निराश होकर कहा। (1) फेस्तुस यहूदी मत तथा मसीहियत के अन्तर से अनजान था (25:19क) (आज कई लोग पुरानी तथा नई वाचाओं में अन्तर नहीं करते।) (2) वह मसीह के पुनरुत्थान से अनजान था (25:19ख)। (बहुत से लोग आज यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान की आवश्यकता को नहीं समझते)। (3) वह परमेश्वर के सेवक (25:24-''इस मनुष्य'') के विषय में अनजान था अर्थात वह कौन था, उसका विश्वास क्या था और वह क्या सिखा रहा था। (बहुत से लोग बाइबल तथा इसकी शिक्षाओं से अनजान हैं)। (4) वह आत्मिक महत्व की बातों से अनजान था (26:24)। (यह बात हमारे भौतिक संसार में लागू होती है)। (5) वह व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी से अनजान था (25:14, 24; 26:32)। (हम में से बहुत से लोगों को अपने पापों का दोष दूसरों पर लगाना अच्छा लगता है।) आप जोड़ सकते हैं (6) वह प्रभु की बात मानने में असफल होने के परिणामों से अनजान था, आदि (इस पाठ को ''उलझन में पड़ा आदमी'' [25:20] अर्थात नई और पुरानी वाचाओं के सम्बन्ध में *उलझन में पड़ा* आदि नाम दिया जा सकता है)।

पाद टिप्पणियां

[1]अब कई किसानों के पास ''हॉटशॉट'' (धातु की खोदनी जिससे विद्युत करंट निकलता है) हैं, परन्तु अधिकतर किसान, अभी भी कम से कम कभी-कभी काम करने और जानवरों को हांकने के लिए छड़ी का इस्तेमाल करते हैं। [2]अपनी प्रासंगिकता के ''खोदने'' शब्द के आरम्भिक उपयोग में मैंने उन्हें उद्धरण चिह्नों में रखा क्योंकि आज उनका अर्थ कहीं-कहीं नकारात्मक लग सकता है। परन्तु, मैं इस शब्द का इस्तेमाल काम करने के आग्रह के रूप में सकारात्मक अर्थ में ही करूंगा। इस कारण पाठ में उद्धरण चिह्न नहीं मिलते। [3]इतिहास में राजा अग्रिप्पा को हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय के रूप में जाना जाता है। उसका पिता हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम, प्रेरितों 12 अध्याय वाला हेरोदेस ही था जिसने याकूब को मरवाया और पतरस की हत्या की कोशिश की थी। हेरोदेस महान उसका परदादा था जिसने बालक यीशु के विरुद्ध उसे खोजकर मार देने का मिशन चलाया था। अग्रिप्पा हेरोदेस राजवंश में अन्तिम शासक था; कभी-कभी उसे ''अन्तिम हेरोदेस'' भी कहा जाता है। हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय पर और जानकारी के लिए, इस भाग का पिछला पाठ और ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 42 से आरम्भ होने वाला पाठ ''आदमी जिसने अपने आपको परमेश्वर समझा था'' देखिए। [4]हैनरी ई. डोस्कर, *द इन्टरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइकलोपीडिया, ed. जेम्स ऑर मे*''हैरड।'' [5]इस चाचा (चाल्सिस के हेरोदेस) का उल्लेख बाइबल में नहीं है, और ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 180 के चार्ट में भी नहीं है। हेरोदेस परिवार में चाचों तथा भतीजियों में काफ़ी शादियां हुईं। [6]कई प्राचीन शिलालेखों में, बिरनीके को ''रानी'' के रूप में दिखाया जाता था। [7]बाद में, यहूदी विद्रोह को शांत करने के लिए यहूदिया में आए तीतुस के साथ सम्बन्ध हो गया और रोम के लोगों के विरोध के बावजूद उसने उससे शादी कर ली होगी। [8]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़* Vol. 2. [9]फेस्तुस ने वहां पर महिलाएं होने पर भी जिसमें बिरनीके भी थी ''पुरुषों'' के लिए अव्यापक शब्द का इस्तेमाल किया। वह अपने राजसी अतिथियों में से किसी का भी अपमान नहीं करना चाहता था, इसलिए उसने इस प्रकार की सभा को सम्बोधित करने का यह ढंग अपनाया होगा। [10]फेस्तुस उसी चाल में फंस गया जिसमें हम में से बहुत से लोग फंसते हैं। जितने भी यहूदियों के साथ *उसने बात की थी* सब ने पौलुस की निंदा की थी, सो उसने कहा ''*सारे* यहूदियों''। यह कह देना कितना आसान है कि ''*हर कोई* ऐसा या वैसा सोचता है!''

[11]फेस्तुस बड़ी सावधानी से अपने आपको छोड़कर अपनी दुविधा का दोष दूसरों पर लगाता था, चाहे वह फेलिक्स हो (25:14), या यहूदी हो (25:24) या पौलुस (26:32)। [12]वास्तव में पौलुस की अपील से मामला उसके हाथों से निकल जाने के कारण निर्णय लेने के लिए उसके पास कुछ था ही नहीं परन्तु वह अपने आपको निर्णायक भूमिका में दिखाना चाहता था। [13]लोगों में फेस्तुस का यह मान लेना कि पौलुस निर्दोष था, उसकी सहायता के लिए बहुत देरी से आई बात थी, परन्तु नि:संदेह यह उस क्षेत्र में कलीसिया के दूसरे सदस्यों के लिए लाभदायक थी। [14]पौलुस आम तौर पर अपने प्रवचनों के आरम्भ में हाथ हिलाता था। परन्तु कई लोगों का विचार है कि उसका यह हाथ हिलाना राज्यपाल तथा राजा को नमस्कार होगा। [15]उस प्रसिद्ध सभा के सामने पौलुस का उत्तर उसका सबसे लम्बा और भाषा के हिसाब से सबसे स्पष्ट समझ आने वाला था। [16]स्पष्टत:, पौलुस के दिमाग में यीशु के सम्बन्ध में यहूदी गलियारों में विवाद की बात थी। [17]तिरतुल्लुस के विपरीत, पौलुस ने यह नहीं कहा कि वह थोड़े शब्दों में अपनी बात कह देगा (देखिए 24:4)। अध्याय 26 को ऊंचे स्वर में केवल पांच मिनटों में पढ़ा जा सकता है, जो फिर से इस बात का प्रमाण है कि लूका ने जो प्रवचन लिखे उन्हें आत्मा की प्रेरणा से सम्पादित कर दिया। [18]स्पष्ट तौर पर, वह फेस्तुस को खोया हुआ उद्देश्य (मत्ती 7:6) ही मानता था। पौलुस ने अपनी टिप्पणियों में पूरी सभा को दो बार शामिल किया (26:8, 29), परन्तु मुख्य ध्यान केवल अग्रिप्पा पर ही रखा। [19]प्रेरितों 7:58 और ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 36 पर पाद टिप्पणी 43 देखिए। [20]यह द *बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री, Vol.1.* में वारेन डब्ल्यू वियर्सबे के पांच प्वाइंटों से लिया गया है।

[21]सम्भव है कि ''अपनी जाति'' से भाव तरसुस के यहूदी समाज से है; अधिक सम्भावना यह

है कि यह यहूदिया के यहूदी समाज की बात है। [22]पौलुस के आरम्भिक जीवन पर नोट्स के लिए, ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' पृष्ठ 95, 96 और 97 देखिए। [23]वाक्यांश ''बारहों गोत्र'' पर ध्यान दीजिए। ''भटके हुए दस गोत्रों'' की दंतकथा से बहुत सी झूठी शिक्षाएं निकली हैं। आई. हॉवर्ड मार्शल ने टिप्पणी की, ''यह विचार कि लौटकर आए यहूदा और बिनयामीन (इस्राएल राज्य के दक्षिणी भाग) के निर्वासित ही नये नियम के समय के यहूदी लोग थे, एक भ्रम है जो मुश्किल से जाता है (परन्तु, उदाहरण के लिए, देखिए लूका 2:36)'' (*द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेन्ट कमैन्ट्रीज़, gen. ed., R.V.G. Tasker)। वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे का कहना है, ''यह तो सत्य है कि दस उत्तरी गोत्रों (इस्राएल) को अश्शूर ने 722 ई.पू. में जीत कर कुछ सीमा तक उन्हें अपने साथ मिला लिया था, परन्तु यह सत्य नहीं है कि वे दस गोत्र ''खो गए'' थे या उनका नाश हो गया था। यीशु ने बारह गोत्रों की ही बात की थी (मत्ती 19:28) और याकूब ने भी (याकूब 1:1) और प्रेरित यूहन्ना ने भी (प्रकाशितवाक्य 7:4-8; 21:12)।'' एफ. एफ. ब्रूस ने टिप्पणी की, ''खोए हुए दस गोत्रों की मिथ्या का बाइबल के रिकॉर्ड में कोई योगदान नहीं है'' (*द बुक ऑफ ऐक्ट्स,* द न्यू इन्टरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट, rev. ed)। [24]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 197 और 200 पर शब्दावली में देखिए ''ख्रिस्तुस'' और ''मसीह''। [25]इन आशाओं के बढ़ने की व्याख्या के लिए, देखिए विलियम बार्कले, *द लैटर 'ज़ टू द कुरिन्थियन्ज़,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ rev. ed. [26]अय्यूब 19:25-27; भजन संहिता 16:10; यशायाह 26:19; होशै 6:2 भी देखिए। इस प्रकार के पदों में उन लोगों के उदाहरण भी जोड़ लेने चाहिए जो पुराने नियम के समयों में मुर्दों में से जी उठे थे (1 राजा 17:23; 2 राजा 4:35; 13:21)। [27]सदूकी, जो मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास नहीं रखते थे, व्यवस्था की पहली पांच पुस्तकों को तो वे मानते थे परन्तु भविष्यवक्ताओं को नहीं। [28]यूनानी में केवल ''तेरे'' है (देखिए KJV), परन्तु सर्वनाम बहुवचन है जिससे संकेत मिलता है कि पौलुस ने उस समय केवल अग्रिप्पा को ही नहीं बल्कि सारी भीड़ को सम्बोधित किया। NASB में इसे समझाने के लिए ''लोग'' शब्द जोड़ दिया गया है। [29]''यीशु के नाम'' उन सबको कहा गया है जो वह था और जो उसकी शिक्षा थी। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 112 से आरम्भ होने वाले पाठ ''उसी के नाम से'' देखिए। [30]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 199 पर शब्दावली में ''पवित्र लोग'' देखिए। इस संदर्भ में पौलुस द्वारा इस शब्द के प्रयोग से संकेत मिला कि अब उसे अहसास हो गया था कि वे उन आरोपों से निर्दोष थे जिनके कारण उन्हें बन्दी बनाया गया था। [31]सम्भवत: पौलुस के शब्दों का अर्थ हो सकता है कि उसके कारण मसीही लोगों ने अंगीकार किया कि यीशु परमेश्वर है, जो *एक यहूदी* की नज़र में परमेश्वर की निंदा थी। (''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 198 पर शब्दावली में ''ईश्वर की निंदा'' देखिए)। परन्तु यह तथ्य कि उसने उन्हें मजबूर किया था इस विचार से अधिक मेल खाता है कि उसने उन्हें यीशु का इन्कार करवाने की कोशिश की थी, जो कि एक *मसीही* की नज़र में परमेश्वर की निंदा थी। यहां दिए अधूरे वाक्य का NASB में अनुवाद ''मैंने उन्हें मजबूर करने की *कोशिश की* ...'' किया गया है। इस प्रकार पौलुस मान रहा था कि वह अपने प्रयासों में सफल नहीं हो पाया जिनके कारण सम्भवत: वह मसीहियों का शत्रु बन गया था। [32]प्रेरितों के काम में मिलने वाले पौलुस के मन परिवर्तन के तीसरे वृत्तांत का आरम्भ यहीं से होता है। ये सभी वृत्तांत ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के 7 से 24 पृष्ठों पर दिए गए थे। प्रेरितों 26 के वृत्तांत पर अतिरिक्त टिप्पणियों के लिए उन प्रवचनों को देखिए। [33]पौलुस ने बहुवचन रूप ''पैने'' का इस्तेमाल किया। प्रभु ने *कई बार* उसे कुरेदा था। [34]पिछले एक पाठ में हमने ध्यान दिया था कि पौलुस को कठोर विवेक से *नहीं* कुरेदा गया था (23:1; ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' का पृष्ठ 98 देखिए)। उस पहले पाठ के कुछ विचार चर्चा के लिए इस पाठ में शामिल किए जा सकते हैं। [35]यदि हेरोदेस और उसके परिवार के मन साफ होते तो यीशु तथा उसके अनुयायियों के साथ पिछले कई वर्षों के सम्पर्क से उन्हें प्रभु को जानकर उसके पीछे चलने का विलक्षण अवसर मिला था (लूका 8:15)। [36]यूनानी शब्द का अनुवाद ''सेवक'' वह धारणा शब्द (डायकोनोस) नहीं, बल्कि वह शब्द है जिसका अर्थ है ''अंडर रोवर'' ''अन्डर रोवर'' जंगी जहाज़ के किसी छोटे-मोटे नौकर को कहा जाता था। [37]यीशु ने पौलुस को प्रेरित बनने

की योग्यता देने के लिए दर्शन दिया। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 99 और 100 देखिए। [38]यूनानी में केवल ''लोगों'' ही है, परन्तु, इस संदर्भ की तरह इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर यहूदी लोगों के लिए किया जाता था। [39]यूनानी शब्द के अनुवाद ''बचाता रहूंगा'' को ''छुड़ाता रहूंगा'' भी किया जा सकता है। पौलुस की पूरी सेवकाई में, प्रभु ''निकास मिशनों'' की शृंखला में लगा रहा। [40]इस विचार को आवश्यकता के अनुसार बढ़ाया जा सकता है।

[41]पौलुस ने यरूशलेम की अपनी पहली यात्रा के दौरान ''यहूदिया के सारे देश में'' प्रचार नहीं किया (गलतियों 1:18, 22-24)। परन्तु यरूशलेम में दोबारा जाने पर उसे प्रचार के अवसर मिले थे (12:25; 15:2-4; आदि)। [42]पश्चात्ताप के अर्थ तथा महत्व को यहां पर समझाना आवश्यक हो सकता है। इस व्याख्या में आयत 18 के शब्द शामिल किए जा सकते हैं: ''कि वे अन्धकार से ज्योति की ओर फिरें।'' ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 198 पर शब्दावली में देखिए ''पश्चात्ताप।'' [43]यह वाक्य इस पद को कुलुस्सियों 1:18 और 1 कुरिन्थियों 15:20 के बराबर कर देता है। निश्चित रूप से, यीशु मुर्दों में से सबसे पहले जी उठने वाला नहीं था, बल्कि वह जी उठी देह के साथ उनमें से सबसे पहला *था* जो फिर कभी नहीं मरेंगे। मूल शास्त्र में, यह स्पष्ट नहीं है कि ''पहिले'' शब्द का क्या अर्थ है। NASB में इस शब्द को सुसमाचार के प्रचार के लिए प्रासंगिकता बताया गया है। [44]ग्रेट ब्रिटेन तथा अन्य देशों में RSPCA (रॉयल सोसायटी फॉर द प्रिवेंशन ऑफ क्रुएलिटी टू एनिमल्स) जबकि अमेरिका में ASPCA (अमेरिकन सोसायटी फॉर द प्रिवेंशन ऑफ क्रुएलिटी टू एनिमल्स) है। शब्दों के इस खेल को तभी इस्तेमाल करना चाहिए जब सुनने वाले इन्हें समझते हों। [45]शायद फेस्तुस को पौलुस की रब्बी की शिक्षा का पता चल गया था। शायद उसने पौलुस को जेल की कोठरी में अपने चर्मपत्रों के साथ बिना थके अध्ययन करते देखा था (देखिए 2 तीमुथियुस 4:13)। शायद वह पौलुस के बात करने के ढंग से प्रभावित हो गया था। [46]इसकी तुलना लूका 1:3; प्रेरितों 23:26; 24:3 से कीजिए। व्यक्ति का सम्मान न कर पाने की स्थिति में उसके पद का सम्मान करने का यह एक और उदाहरण है। [47]जिस शब्द का हिन्दी में अनुवाद ''पागल'' (देखिए 26:11, 24, 25) हुआ है उसके लिए यूनानी शब्द *manei* है जिससे हमें अंग्रेज़ी के शब्द ''maniac'' अर्थात सनकी, ''manic'' और ''mania'' अर्थात पागलपन'' मिले हैं। [48]प्रेरितों के काम पुस्तक में ''मसीही'' शब्द यहां दूसरी बार आया है। स्पष्टत:, यह मसीह के अनुयायियों के लिए इस्तेमाल होने वाला सामान्य पदनाम था। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि अग्रिप्पा ने इस शब्द का इस्तेमाल अपमानजनक रूप से किया हो। ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पाठ ''पहले अन्ताकिया में'' में पृष्ठ 18 और 19 पर प्रेरितों 11:26 पर नोट्स देखिए। [49]मूल शास्त्र का रफ़ सा अनुवाद होगा, ''इतने से ही, तू मुझे मसीही बनाना चाहता है।'' ''बनाना'' के लिए यूनानी शब्द का अनुवाद ''करना'' भी हो सकता है। ''थोड़े'' का अर्थ समय या साधन (थोड़े प्रयास या थोड़ा मानना) हो सकता है। यह जाने बिना कि अग्रिप्पा ने वे शब्द *कैसे* कहे, हमें यह पता नहीं चल सकता कि वह गम्भीर था या नहीं। [50]यह तथ्य कि पौलुस ने समझा कि अग्रिप्पा गम्भीरता से बोल रहा था सम्भवत: यह विश्वास करने के लिए एक मजबूत तर्क है कि अग्रिप्पा की बातें बड़ी गंभीरतापूर्वक कही गई थीं।

[51]तीस या अधिक वर्ष पहले पौलुस पुरुषों तथा स्त्रियों दोनों को बांधने से नहीं हिचकिचाता था (9:2; 26:10), परन्तु अब वह किसी को बन्धे हुए नहीं देखना चाहता था! [52]ध्यान दें कि अग्रिप्पा ने ''मसीही'' बनने की बात की, जबकि पौलुस उसे ''मेरे समान'' बनने के लिए कह रहा था। पौलुस के जीवन से पता चल जाता है कि एक मसीही को कैसा होना चाहिए। [53]लूका पौलुस के निर्दोष होने के आधिकारिक प्रमाण ढूंढ़ता रहा। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 18 से प्रेरितों के लिखने के ''उद्देश्य'' देखिए। [54]पौलुस द्वारा कैसर के पास अपील करने के बाद, राज्यपाल के लिए केवल उसे कैसर के पास भेजने का विकल्प ही रह गया था। कैसर को अपील करके पौलुस ने ''गलती की'' या नहीं इस सम्बन्ध में ''पुनरावृत्ति-या स्मरण दिलाने वाले'' पाठ में नोट्स देखिए। [55]जो पहले ही मसीही हैं उनके लिए भी प्रासंगिकता बनाई जा सकती है: परमेश्वर उन्हें और अधिक सेवा लेने के लिए, और अधिक पौलुस के जैसे बनने के लिए ''कुरेदने'' की कोशिश कर रहा हो सकता है।